DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Department of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara chakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – II
Sub. – SANSKRIT
Paper – IV

15×2=30 Marks

आलोचनात्मक प्रश्नोत्तर

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक का वैशिष्ट्य

उत्तर – संस्कृत साहित्य के उपवन में महाकवि कालिदास का आगमन एक वसंतदूत के रूप में माना गया है जिसके कारण उपवन का कोना-कोना पुष्पित हो उठा है। सुरभारती के अमर गायक, शकारि विक्रमादित्य के नौ रत्नों में सर्वोज्ज्वल रत्न कविकुलगुरु कालिदास की रत्नप्रभू लेखनी की अन्यतम भेंट 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' विश्वभारती का एक जाज्वल्यमान रत्न है। यह नाटक महान कृती एवं रससिद्ध कवीश्वर कालिदास की नाट्यप्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है। महाकवि की इस रचना में नाट्य प्रतिभा, कल्पना-चातुरी, भाषा लालित्य, रस-परिपाक, प्रकृति चित्रण, पात्र-वैशिष्ट्य, अलंकार चमत्कर्ष, रंगमंचीय निपुणता, मानव मनोविज्ञान एवं भारतीय संस्कृति के मार्मिक विश्लेषण दृष्टिगोचर होते हैं। सौन्दर्य की मादकता, प्रेम की निश्चलता, प्रकृतिजन्य सरलता, ऋषिकुल की उदात्तता, महर्षि कण्व का आदर्शवात्सल्य, दुर्वासा का निर्मम दण्ड, वासना का प्रक्षालन, आत्मा का निर्मलीकरण, संस्कृति का पीयूष सम्मिलन तथा श्रेयस एवं प्रेयस मनोग्राही ग्रन्थिबन्ध— इन सभी उपादानों को एक साथ मिश्रितकर कविवर कालिदास ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में जो प्रपाणक रस तैयार किया है, वह भारतीय जीवन के निमित्त नितान्त मूल्यवान है। इस नाटक के प्रथम चार अंकों को भोगभूमि, पाँच एवं छठे अंकों को दण्डभूमि और अंतिम अंक को सिद्धभूमि माना गया है।

जहाँ तक शाकुन्तल के चतुर्थ अंक का प्रश्न है, यह अंक अपने-आप में अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस अंक की महत्ता पर मुग्ध होकर एक विद्वान ने लिखा है –

"काव्येषु नाटकं रम्यं तत्रापि च शाकुन्तला।
तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोक चतुष्टयम्॥"

शाकुन्तल के चतुर्थ अंक का कथासार इस प्रकार है– विष्कम्भक द्वारा सूचना मिलती है कि राजा दुष्यन्त महर्षि कण्व के आश्रम में शकुन्तला से गान्धर्व विवाह के अनन्तर अपनी राजधानी लौट गये हैं। उनकी विरह वेदना में शकुन्तला व्यथित है। वह दुष्यन्त की चिन्ता में निमग्न है और इसी बीच आश्रम में महर्षि दुर्वासा का आगमन होता है। महर्षि भिक्षा की याचना करते हैं, किन्तु दुष्यन्त के चिन्तन में मग्न शकुन्तला उनकी आवाज को सुन नहीं पाती है। इससे महर्षि क्रुद्ध हो जाते हैं और

P.T.O.

क्रोध में यह शाप देकर चल देते हैं कि "तू जिस पुरुष के चिन्तन में इस प्रकार मग्न हो कि मेरी बात तक नहीं सुनती वह पुरुष स्मरण दिलाने पर भी तुम्हें स्मरण नहीं कर पायेगा।" परन्तु इसी बीच प्रियम्वदा एवं अनसूया आकर ऋषिवर से प्रार्थना करती है जिससे शाप का स्वरूप बदल जाता है। अब अभिज्ञान दिखाने पर राजा पहचान सकता है।

तीर्थयात्रा से लौटने पर महर्षि कण्व को तपोवन से शकुन्तला-दुष्यन्त के गान्धर्व विवाह का पता चल जाता है। शकुन्तला गर्भवती है, यह भी वे जान जाते हैं। अतः वे अपने दो शिष्यों एवं एक वृद्धा तपस्विनी के साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी करने लगते हैं। अपनी पालिता कन्या के प्रति कण्व का वात्सल्यभाव उमड़ पड़ता है। शकुन्तला की विदाई समस्त कण्वाश्रम को स्तब्ध कर देती है। शकुन्तला को उसके पतिगृह भेजकर अपने हृदय के भार को वे हल्का कर लेते हैं।

इस प्रकार कथानक तो छोटा है किन्तु इसमें कालिदास की मौलिक उद्भावना देखते बनती है। इस अंक में महाकवि ने प्रकृति को साक्षात् चेतनप्राणी के रूप में चित्रित किया है। शकुन्तला अपने पतिगृह को प्रस्थान कर रही है, यह देखकर हिरणों ने कुश आदि खाना बन्द कर दिया है, मयूरों ने नाचना बन्द कर दिया है, वन लताएँ अपने पुष्पों को बिखेरकर अभिनन्दन कर रही हैं एवं लताओं ने अपने पीले पत्तों के रूप में आँसू बहाना आरम्भ कर दिया है। शकुन्तला की विदाई के इस अवसर पर वृक्ष एवं वन देवताओं ने विविध प्रकार के वस्त्र एवं आभूषण देना प्रारम्भ कर दिया है। गर्भिणी मृगवधू और उसका पुत्र तो शकुन्तला का आँचल ही पकड़ लेते हैं।

इस तरह यहाँ प्रकृति से शकुन्तला का साक्षात् सम्बन्ध जोड़कर महाकवि ने उसे निसर्ग कन्या बनाने का सफल प्रयास किया है। प्रकृति तो यहाँ सजीव प्राणी की भूमिका निभा रही है। इस चतुर्थ अंक में महाकवि ने दुर्वासा शाप की कल्पना करके दुष्यन्त और शकुन्तला के चरित्र को निष्कलंक एवं उज्ज्वल बना दिया है।

तत्र श्लोक चतुष्टयम् —

जब शकुन्तला अपने पतिगृह को प्रस्थान कर रही है तब आश्रमवासी उसे आशीर्वाद दे रहे हैं — जाते भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवी-शब्दं लभस्व, वत्से! वीरप्रसविनी भव — वत्से, भर्तुर्बहुमता भव आदि।

शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में चार श्लोक विद्वानों के द्वारा अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण बताए गये हैं। शकुन्तला अपने पतिगृह जा रही है। दुष्यन्त के पास अपनी पुत्री को भेजते समय संसार के विषय से विमुख होने पर भी

महर्षि कण्व की करुण मनोदशा देखिए —

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥"(4/5)

चतुर्थ अंक का आठवाँ श्लोक भी करुण भाव का मार्मिक उदाहरण है इसमें बाह्य प्रकृति से मानव की अन्तः प्रकृति का गूढ़ सम्बन्ध व्यक्त किया गया है —

"पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥"(4/8)

प्रकृति तथा मनुष्य का ऐसा लघ्वनुभूतिपूर्ण वर्णन संस्कृत साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। यह दृश्य कालिदास के प्रकृत प्रकृति प्रेम तथा असीम करुणरस की वर्णनशैली का सुस्पष्ट परिचायक है।

प्रकृति की गोद में पली-बढ़ी शकुन्तला आज अपने प्यारे सहचरों को छोड़कर ससुराल की महारानी बनने जा रही है। कण्व का गला रुँधना सहज है। चतुर्थ अंक के सोलहवें श्लोक में दुष्यन्त के प्रति महर्षि कण्व का यह सन्देश कितना मार्मिक है —

"अस्मादृशाधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः
त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम् ।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः ॥"(4/16)

चतुर्थ अंक का सत्रहवाँ श्लोक विदा होती हुई पुत्री के प्रति पिता का भारतीय संस्कृति के अनुरूप बड़ा ही उत्तम उपदेश है। शकुन्तला को शिक्षा देते हुए कण्व कहते हैं कि यद्यपि हमलोग वनवासी हैं, फिर भी लौकिक व्यवहार को जानते हैं अतः वत्से! त्वमितः पतिगृहं

प्राप्य —

" शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥"(4/17)

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शाकुन्तल का चतुर्थ अंक मानवीय संवेदना एवं लोकव्यवहार से परिपूर्ण है। यहाँ एक बात अत्यधिक विचारणीय है कि आध्यात्मिक जीवन की करुणा भौतिक जीवन की करुणा से अधिक प्रवाहशील, विवेकशील एवं सक्षम होती है, इसलिए यह शोक को श्लोक में परिणत कर देती है - यह मर्म शाकुन्तल के चतुर्थ अंक से प्रकट होता है। कला और जीवन का अद्भुत समन्वय इस चतुर्थ अंक की महती विशेषता है।

———— o ————